ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

के मानविकी संकाय की हिन्दी विषयक
पी–एच॰डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध प्रारूप

प्रस्तावित विषय :

“नंदकिशोर आचार्य के नाटकों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना”

शोध-निर्देशक :

डॉ॰ रीता दुबे

सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग, सी॰ एम॰ कॉलेज
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा

शोधार्थी :

रोहित कुमार पटेल

एम॰ ए॰ हिंदी
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा
जे॰ आर॰ एफ॰
पैट क्रमांक

<u>सहमति-पत्र</u>

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री रोहित कुमार पटेल**, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा को प्रस्तावित शोध-प्रारूप **“नंदकिशोर आचार्य के नाटकों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना”** विषय पर शोध-निर्देशन देना मुझे स्वीकार है। मेरी जानकारी में इस विषय पर शोध-कार्य संपन्न नहीं हुई है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करतीं हूं।

भवदीय

डॉ॰ रीता दुबे
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग, सी॰ एम॰ कॉलेज,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा

शोध सारांश

हिंदी नाट्य साहित्य परम्परा में नंदकिशोर आचार्य का महत्वपूर्ण स्थान है। नंदकिशोर आचार्य ने अपने नाटकों में पौराणिक, ऐतिहासिक, मिथकीय कथाओं के माध्यम से वर्तमान समाज के विघटन, संबंधों की जटिलता, संस्कृति का ह्रास, स्त्री अस्मिता जैसे मुद्दों को पाठक के समक्ष लाने का काम किया है। उनकी रचना समाज और मानव के संबंधों में आई गिरावट को भी रेखांकित करती है। उन्होंने नाट्य साहित्य द्वारा संस्कृति एवं इतिहास की पुनर्व्याख्या मानवीय एवं सामाजिक हितों में किया है। ऐसी स्थिति में प्रस्तावित शोध विषय अत्यंत ही सारगर्भित एवं वैज्ञानिक मूल्य से अन्वेषित है।

शोध-निर्देशक :

डॉ० रीता दुबे

सहायक प्राध्यापक

हिंदी विभाग, सी० एम० कॉलेज

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,

दरभंगा

शोधार्थी :

रोहित कुमार पटेल

एम० ए० हिंदी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,

दरभंगा

जे० आर० एफ०

पैट क्रमांक

➢ भूमिका :-

नाटक हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण विद्या है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है " विलक्षण बात यह है कि आधुनिक गद्य साहित्य की परंपरा का प्रवर्तन नाटकों से हुआ है।" नाटक दृश्य काव्य है। अर्थात् इसका आनंद पढ़कर एवं देखकर प्राप्त किया जा सकता है। नाटक की सार्थकता रंगमंच पर उसकी प्रस्तुति से लगाया जा सकता है। हिंदी नाट्य साहित्य का आरंभ आधुनिक काल लगभग (19वीं शताब्दी) से हुआ। हिंदी से पूर्व संस्कृत और प्राकृत में समृद्ध नाट्य परंपरा थी, लेकिन हिंदी में नाटकों का विकास आधुनिक काल से हुआ। भारतेन्दु से पूर्व भी ब्रजभाषा में कुछ नाटक गद्य और पद्य में लिखे गए। परंतु भारतेन्दु युग से हिंदी नाटकों का सम्यक् विकास दिखाई पड़ता है।

साहित्य समाज का दर्पण है। इसके द्वारा हम किसी भी समाज के अतीत और वर्तमान स्वरुप को देख पाते है। समाज और संस्कृति उस काल के साहित्य में ही समाहित होती है। साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ - साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखंड की विसंगतियां, विद्रूपताओ एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है। जिससे समाज में सुधार आता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है। संस्कृति अनेक तहज़ीबो, आस्थाओं, धर्मो, जातियों, समाजों की अनेक धाराएं संस्कृति के सागर में आकर एक हो जाती है। इसी एकत्व को रचने का काम साहित्य करता है। साहित्य और समाज दोनों ही एक दूसरे के संपूरक हैं।

नंदकिशोर आचार्य हिंदी के प्रसिद्ध कवि, आलोचक, कथाकार, नाटककार, और गांधीवाद दर्शन से प्रभावित साहित्यकार है। रंगमंच में भी वे नाट्यलोचना और नाट्यलेखन दोनों क्षेत्रों में सक्रिय

रहे हैं। रंगकर्म से उनका सीधा लगाव है। उनके नाटकों में संस्कृति एवं इतिहास की आलोचनात्मक दृष्टि, व्यक्ति की अस्मिता, संबंधों की जटिलता, हिंसा, प्रतिशोध, मूल्यहीन राजनीति के कुत्सित रुप आदि देखने को मिलती है। इन्होंने अपने नाटकों में ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथाओं के माध्यम से आधुनिक समाज की विसंगति को दर्शाया है मिथको के माध्यम से अतीत में जाना फिर वर्तमान की समस्या को दर्शाना उनकी विशेषता है। उनके संबंध में चर्चित नाट्यलोचक डॉ॰ जयदेव तनेजा ने लिखा है- "कवि नाटककार और चिंतन नंदकिशोर आचार्य के लगभग सभी नाटक मानवीय संबंधों की जटिलता, स्थितियों की विडंबना और अतीत के जरिये वर्तमान की विसंगतियों को काव्यात्मक तथा व्यंजनापूर्ण जीवन्त नाट्यभाषा में प्रयोगशील आधुनिक रंग-दृष्टि के साथ उद्घाटित करते हैं।"

उनके नाटकों की एक खास विशेषता नाट्यभाषा में विविधता है। उन्होंने जीवंत भाषा का प्रयोग किया है। देहांतर, हस्तिनापुर की कथावस्तु पौराणिक मिथकीय हैं, इसीलिए इसमें संस्कृतनिष्ठ प्रांजल भाषा है। जिल्ले सुब्हानी और गुलाम बादशाह में उर्दू फारसी मिश्रित भाषा है। पागलघर, जूते, किमिदम् यक्षम् तथा किसी और का सपना जैसे नाटकों में रोजमर्रा की भाषा है। इस प्रकार भाषा के स्तर पर उनमें प्रयोगशीलता दिखाई पड़ती है।

➢ प्रस्तावित शोध की आवश्यकता :-

प्रस्तावित विषय "**नंदकिशोर आचार्य के नाटकों में सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना**" पर शोध कार्य की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि नंदकिशोर आचार्य के नाट्य साहित्य में ऐतिहासिक और पौराणिक समस्याओं को आधुनिक संदर्भ में उठाया गया है। इनके नाटकों में आधुनिक समाज की विसंगति, विद्रूपता, मानवीय संबंधों की जटिलता, हिंसा, प्रतिशोध, मूल्यहीन राजनीति के कुत्सित रूप, व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक द्वन्द का चित्रण किया गया है। साथ ही स्त्री अस्मिता जैसे प्रश्नों को लेखक ने गंभीरता से उठाया है। लेखक ने भारतीय संस्कृति के प्रतिष्ठित पैमानो की पुनर्व्याख्या आधुनिक संदर्भ में की है। प्रस्तावित शोध-प्रबंध आगामी शोधार्थियों-विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

➢ शोध का महत्व :-

प्रसादोत्तर नाटककारों में नंदकिशोर आचार्य अग्रगण्य है। उनकी रचनाएं व्यक्ति के अंतर्मन को कुरेदती है। उनके सभी नाटकों में व्यक्ति की पीड़ा, समाज की विकृत मानसिकता तथा सामाजिक विद्रूपता का अन्यतम चित्रण हुआ है। मंच पर जब इन नाटकों का मंचन होता है, तो ऐसा लगता है कि हम नाटक नहीं देख रहे बल्कि हमारे समाज का सत्य हमारे सामने उजागर हो रहा है। उनके ऐतिहासिक और पौराणिक नाटक न केवल हमारी इतिहास दृष्टि को समृद्ध करते हैं अपितु वर्तमान और भविष्य के लिए एक नवीन रास्ते का निर्माण भी करते हैं। उनके प्रमुख नाटक है :- देहांतर, पागलघर, हस्तिनापुर, जिल्ले सुब्हानी, किसी और का सपना, जूते, किमिदम् यक्षम्, गुलाम बादशाह, बापू।

देहांतर की रचना ययाति, शर्मिष्ठा, देवयानी और पुरु की पौराणिक कथा-भूमि को आधार बनाकर की गई है। ययाति भोगलिप्सा को ही जीवन का आधार मानता है। इसलिए अपने पुत्र पुरु से वह यौवन प्राप्त करता है। ययाति की भोगलिप्सा पूरे परिवार को असहज, तनावपूर्ण और त्रासदी में जीने को मजबूर कर देती है । शर्मिष्ठा अपने वृद्ध पति में अपने पुत्र के यौवन को स्वीकार नहीं करना चाहती। विन्दुमती के कथन से ययाति का मोहभंग होता है। वह कहती है "आपके इस पौरुष ने शर्मिष्ठा के देह से जन्म लिया है। शर्मिष्ठा देवी अपने ही पुत्र के पौरुष को कैसे स्वीकार करती" इससे ययाति को चेतना होती है और वह पुरु का यौवन लौटा देता है। इस कथा के माध्यम से नाटककार आधुनिक समाज में व्याप्त भोगलिप्सा निरर्थकता प्रमाणित करते हैं। देहांतर में नियोग के मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व, आधुनिक मनुष्य की जटिल मानसिकता, कुंठा, देह, भोग, यौवन के शाश्वत विमर्श और सत्ता के खेल के समीकरण का उद्घाटन किया गया है।

पागलघर सत्ता के डर, भय और उससे बचने के लिए किए गये कवायदों को उजागर करता हैं। इसमें बताया गया है कि सत्ता विचारवान और सत्य का साथ देने वालों को पागल कहती है, जबकि सत्ता के कारनामों से ही दुनिया पागलघर में बदलती जा रही है। इस नाटक में एक लेखक को पागलखाने में बंद कर दिया गया है। उसके खिलाफ शिकायतें हैं कि वो टी॰ वी॰ नहीं देखता, ग्यारह बजे के बाद भी पढ़ता है और वह भी 'मर्डर इन कैथेड्रल', 'अपराध और सजा', पजामा पहना है, ग्लास बाएं हाथ से उठता है यह सब पर्याप्त है उसको पागल सिद्ध करने के लिये। हैरत है कि नाटककार इन घटनाओं को अस्सी के दशक में देख रहा है। आज यह सब कुछ कितना प्रासंगिक हो गया है। इस समय में सबसे खतरनाक बीमारी विचार है क्योंकि यह किसी एक को भी लग जाये तो फैलते ही जाती है। सत्ता हमेशा चाहती है वह पुरस्कार,

सुविधाओं सम्मान के लालच में लेखक को खरीद ले। आज यह कितना स्वाभाविक है इस स्थिति में जो भी सच के साथ है उसे झुकाने और उसके आत्मविश्वास को तोड़ने की तैयारी चल रही है।

हस्तिनापुर नाटक महाभारत की पुनर्मीमांसा है। इसमें पौराणिक समस्याओं को आधुनिक संदर्भ में उठाने का प्रयास किया गया है। इसमें विदुर की मां शुभा दासी और कुंती के बीच संवाद है। अस्मिता की दृष्टि से वह शुद्र भी है और स्त्री भी, इसीलिए वह कुरु वंश के मिथ और रक्त शुद्धता पर प्रश्न चिन्ह लगती है और बताती है कि महाभारत में केवल भीष्म ही एकमात्र कुरु है बाकी सब वे कुरु है जिन्हें भीष्म ने मान्यता दी है। शुभा महाभारत के दो महान चरित्रों भीष्म और व्यास को उनकी महानता के आवरण से झाकंती हुई उनकी दयनीयता और हठ को उजागर करती है। शुभा महाभारत युद्ध के लिए भीष्म को दोषी मानती है जो अपने ही आत्मबिंब से लिपटे हुए हैं और अपनी प्रतिज्ञा पर अड़े हुए हैं। नाटककार महाभारत के श्रेष्ठ कृत्य भीष्म प्रतिज्ञा को प्रश्न चिन्ह लगा देता है। “तुमने देखा होता युवा सत्यवती का वैधव्य, अम्बा का देह त्याग, अम्बिका का दुख, अम्बालिका का तिल-तिल कर गलना- तो तुम समझती की भीष्म प्रतिज्ञा ने क्या किया है निर्दोष जीवन के साथ”। स्त्री की स्वतंत्रता और पितृसत्ता के छल पर भी नाटककार की नजर है। “कोई भी स्त्री किसी पुरुष को प्रेम के बिना कैसे सह सकती है, प्रेम के बिना देह सौंप देने से बड़ा अपमान भी क्या हो सकता है किसी का”। मात्र दासी के गर्भ से उत्पन्न होने के कारण विदुर जैसे नीतिज्ञ को राज-सत्ता के अधिकार से वंचित करना शुभा को कचोटता है। नाटककार ने इस और संकेत करके पारम्परिक समाज व्यवस्था की एक बड़ी कमजोरी उजागर की है।

‘जिल्ले सुब्हानी’ में राजनीति के दावपेंच, सत्ता प्राप्ति और उसे बनाए रखने के लिए किए जाने वाले अनगिनत समझौतों

को उजागर किया गया है। यह आज के समय का सबसे प्रासंगिक पक्ष है जिसमें सत्ता पर बैठे लोगों के चेहरे बदलते हैं, लेकिन सत्ता का चरित्र नहीं बदलता क्योंकि इसका ढांचा वही रहता है। सत्ता हासिल करने के दावपेंच के बीच यह नाटक बड़े ही गंभीर और साहसपूर्ण ढंग से यौनिकता को भी अपना विषय बनाती है। इसमें नंदकिशोर आचार्य ने स्त्री अस्मिता के प्रश्न को भी उठाया है। यह नाटक इस्लामी संस्कृति एवं सभ्यता से भी हमारा परिचय कराती है। 'जूता' एक व्यंग्यात्मक नाटक है जिसके केंद्र में है एक अंधविश्वासी कंजूस सौदागर। वह फटे हुए जूते को मुकद्दर का जूता समझता है। वह जूता ही उसकी दुर्दशा का कारण बनता है। यह एक हास्य व्यंग्य नाटक है। इसमें अंधविश्वास को भी उजागर किया गया है। इस नाटक में न्याय व्यवस्था एवं उसकी मान्यताओं पर भी प्रहार किया गया है। इसमें दास व्यवस्था एवं गुलामों की स्थिति का भी वर्णन है।

'गुलाम बादशाह' एक ऐतिहासिक नाटक है। यह दिल्ली सल्तनत के समय और समाज को आधार बनाकर लिखा गया है। यह नाटक मुस्लिम शासक बलबन के आखिरी दिनों की घटनाओं पर आधारित है। इस नाटक में बादशाह अपनी कुर्सी का गुलाम हो जाता है। उसे अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है और अवाम हमेशा हाशिए पर ही रहती है। इस नाटक में दिखाया गया है की सत्ता बदलने में आम आदमी का योगदान है पर सत्ता का हिस्सा वह नहीं बन पाता। इस नाटक के माध्यम से लेखक आज के राजनीतिक परिदृश्य पर भी कटाक्ष करते हैं।

'किमिदम् यक्षम्' व्यक्ति की अस्मिता की तलाश का दिलचस्प नाटक है। यह एक प्रयोगशील नाटक है। यह एक रहस्यमयी नाटक है जो अपने कथ्य और शिल्प दोनों में बेजोड़ है। इस नाटक का कथानक मनोवैज्ञानिक इडिपस ग्रंथि पर आधारित है। सांप की तरह लिपटा अतीत

उसका पीछा करता इंसान, उसे जानने की बेचैनी, खोजने की व्यर्थता सब को इस नाटक में दिखाया गया है। सभी घटनाओं को देखने वाला एक पात्र जो सभी कुछ देखा और जान रहा है। यह जानना, देखना उसके लिए अभिशाप की तरह है। यथार्थवादी नाटक लगते हुए भी यह एक फैंटेसी की तरह लगता है। इसकी पात्र धाय कहती है- "जिंदा रहने के लिए कुछ भी जानना जरूरी नहीं है। जो जान लेता है वह कई बार जिंदा ही मर जाता है।"

"किसी और का सपना" नाटक में अभिनेता और चरित्र के बीच अंतर्द्वंद को दिखाया गया है। यह नाटक रिहर्सल के अंदर से उठ खड़ा होता है। अभिनेता, नाटक लेख और स्वयं की रोजमर्रा की जिंदगी के कई पहलुओं पर प्रकाश डालता है। इस नाटक में अभिनेता समाज और अपने बीच के संघर्ष का अनुभव करता है। जीवन के नाटक में अभिनय, मंच खेलने वाले नाटक के अभिनय, यह दोनों एक-दूसरे में सिमटने लगते हैं, तो प्रश्न उठता है की नाटक आखिर है किसका, नाटककार जो रचना करता है, निर्देशक जो डिजाइन करता है, अभिनेता जो अभिनय करता है या दर्शक जो इसे देखने आते हैं। इसी द्वन्द का रोचक समाधान खोजने का प्रयास करता है यह नाटक। इस नाटक में सत्ता की अव्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था की जड़ता, रोजमर्रा की दुनिया में पिसते हुए परिवार को दर्शाया गया है।

'बापू' आचार्य जी का नवीनतम नाटक है। इस नाटक में लेखक ने गांधी जी के जीवन के अंतिम समय के द्वन्द को दर्शाया है। इसमें गांधी जी के अकेलेपन और अपने अस्त्रों की निष्फलता से अपनी हताशा को दिखाया गया है। गांधी अपने को असहाय और असफल मानते हैं क्योंकि सत्याग्रह और अहिंसा का असली मर्म वे अपने शिष्यों को नहीं समझा पाए। इसमें सत्य और अहिंसा के सिद्धांत को राजनीतिक स्वार्थ के कारण क्षय होते दिखाया गया है।

समग्रतः नंदकिशोर आचार्य के लगभग सभी नाटकों में आधुनिक समाज की विसंगति, मानवीय संबंधों की जटिलता, स्थितियों की विडंबना, स्त्री अस्मिता, व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक द्वन्द, सत्ता का चरित्र आदि की अभिव्यक्ति हुई है। लेखक ने अपने नाटकों में ऐतिहासिक, पौराणिक कथाओं के प्रतीक के रूप में आधुनिक समाज की विसंगति को दर्शाया है।

➢शोध का उद्देश्य :-

कोई भी साहित्यकार जब किसी रचना में प्रवृत होता है तो निश्चित रूप से उसके पीछे उसका कोई ना कोई साहित्यिक-सामाजिक उद्देश्य छुपा होता है। प्राचीन काव्यशास्त्रियों ने भी साहित्य के उद्देश्य की महत्ता पर खूब विचार किया है। वे मानते हैं कि बिना उद्देश्यपूर्ण रचना समाज के निर्माण में सकारात्मक भूमिका निभाती है। नंदकिशोर आचार्य न केवल एक सधे हुए रचनाकार है, बल्कि वह एक प्रखर ऐतिहासिक चिंतक हैं। उनके ऐतिहासिक-पौराणिक चिंतन उन्हें जयशंकर प्रसाद की श्रेणी में लाकर खड़ा करता है। उनके नाट्य चिंतन का क्षेत्र व्यापक है। मेरी दृष्टि में अभी तक उनके नाटकों की व्यापक समीक्षा नहीं की गई है। इस दिशा में एक सीमित क्षेत्र में ही कार्य हुआ है।

"नंदकिशोर आचार्य के नाटकों में स्त्री अस्मिता" के प्रश्न विषय पर एक कार्य हुआ है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि यह विषय नाटक में स्त्री प्रश्न और उससे जुड़े सवालों पर ही अपना ध्यान केंद्रित करती है। इनके नाटकों में सामाजिक व्यवस्था की जड़ता, मानवीय गरिमा की रक्षा, सत्ता के बदलते स्वरूप, व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक द्वन्द का उद्घाटन किया गया है। जिन पर प्रकाश डालना जरूरी है। इसीलिए शोध प्रबंध में

नाटकों के विविध आयामों को हर स्तर पर खोलने का प्रयास किया जाएगा। वे तंतु जो आलोचकों की नजर से ओझल रहे हैं, उन्हें प्रकट करने की कोशिश की जाएगी। उनकी कालजयी रचनाएं न केवल आज बल्कि आने वाले कई दशकों तक कैसे समाज के लिए जरूरी है, इस पर भी शोध प्रबंध में विचार किया जाएगा।

➢पूर्वकृत शोध कार्य :-

वर्तमान समय में प्रस्तावित शोध विषय पर शोध कार्य संपन्न नहीं हुआ है। प्रस्तावित विषय "नंदकिशोर आचार्य के नाटकों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना" पूर्णतः मौलिक एवं नवीन कार्य है। इनके अन्य गद्य विद्याओं की तुलना में नाटकों पर बहुत कम ही कार्य हुए हैं, जो निम्न है :-

1. **प्रियंका सांकला - नंदकिशोर आचार्य के नाटकों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, वर्ष 2023**

➢आधार ग्रन्थ सूची :-

1. **देहांतर :** नन्दकिशोर आचार्य , वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1990
2. **रंगत्रयी :** नन्दकिशोर आचार्य , वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1996
3. **नटतृतीया :** नन्दकिशोर आचार्य , वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2001
4. **रंग-यात्रा :** नन्दकिशोर आचार्य , सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर, 2014

➢ शोध की परिकल्पना :-

प्रस्तावित शोध प्रबंध में नंदकिशोर आचार्य के नाट्य साहित्य की गहन समीक्षा की योजना है। उनकी रचनाओं में पौराणिक, ऐतिहासिक, मिथकीय कथाओं के माध्यम से वर्तमान समाज के विघटन, संबंधों की जटिलता, संस्कृति का ह्रास, स्त्री अस्मिता जैसे मुद्दों को पाठक के समक्ष लाया जाएगा। प्रस्तावित शोध में समाज और मानव के संबंधों में आई गिरावट को रेखांकित किया जाएगा। नाट्य साहित्य के द्वारा संस्कृति एवं इतिहास की पुनर्व्याख्या मानवीय एवं सामाजिक हित में किया जाएगा।

➢शोध प्रविधि :-

प्रस्तुत शोध में समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। इसके साथ ही ऐतिहासिक प्रविधि का भी प्रयोग किया जाएगा। तथ्यों के संकलन, संयोजन एवं विश्लेषण के लिए आगमन और निगमन पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। आगमन विधि से तथ्यों का संकलन किया जा सकेगा वहीं निगमन विधि से प्रस्तावित अनुसंधान विषय के संभावित निष्कर्ष का विश्लेषण किया जा सकेगा। प्रश्नावली और साक्षात्कार विधि का भी प्रयोग किया जा सकेगा।

➢ **प्रस्तावित शोध प्रारूप निम्न अध्याय में विभाजित होगा :-**

भूमिका

- **प्रथम अध्याय :-** नन्दकिशोर आचार्य का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- **द्वितीय अध्याय :-** समकालीन नाटककारो की परंपरा में नन्दकिशोर आचार्य का स्थान

- **तृतीय अध्याय :-** नन्दकिशोर आचार्य के नाटकों में निहित सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना

- **चतुर्थ अध्याय :-** नन्दकिशोर आचार्य के नाटकों में रंगमंचीयता।

- **पंचम अध्याय :-** नन्दकिशोर आचार्य के नाटकों में शिल्पगत वैशिष्टय

उपसंहार

परिशिष्ट

➢प्रस्तावित संदर्भ ग्रंथो की सूची :-

1. रंगदर्शन : नेमिचन्द्र जैन, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली, 2008

2. हिंदी नाटक उद्भव और विकास : डॉ॰ दशरथ ओझा, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, 2013

3. हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष : गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2023

4. नाटक और रंगमंच : डॉ॰ सीताराम झा 'श्याम' , बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना, 2012

5. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच : जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, 2002

6. नाट्यलोचना के नये प्रतिमान : देवेंद्र राज अंकुर, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, 2021

7. सर्जक का मन : नंदकिशोर आचार्य, वाग्देवी देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1998

8. हिंदी नाटक : बच्चन सिंह, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1989

9. हिंदी नाटक समाजशास्त्रीय अध्ययन : डॉ॰ सीताराम झा 'श्याम', बिहार ग्रंथ अकादमी पटना, 1979

10. हिंदी का गद्य साहित्य : डॉ॰ रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2022

11. आज का हिंदी नाटक प्रगति और प्रभाव : डॉ॰ दशरथ ओझा, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, 2022

12. हिंदी एकांकी : सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2009

13. हिंदी नाटक इतिहास के सोपान : गोविंद चातक, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, 2023

14. पहला रंग : देवेंद्र राज अंकुर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1999

15. रंगमंच का सौंदर्य शास्त्र : देवेंद्र राज अंकुर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

16. भारतीय नाटक और रंगमंच : जगदीश चतुर्वेदी, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली, 1990

17. तीसरा पाठ : नेमिचन्द्र जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1998

18. हिंदी नाटक : आज-कल : जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, 2010

19. समकालीन हिंदी रंगमंच और रंगभाषा : आशीष त्रिपाठी, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, 2007

20. रंग दस्तावेज सौ साल : डॉ॰ महेश आनंद, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, दिल्ली, 2007

21. आधुनिक हिंदी नाटक : डॉ॰ नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2021

22. हिंदी रंगमंच का उद्भव और विकास : डॉ॰ विश्वनाथ शर्मा, राज पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2001

23. पारसी हिंदी रंगमंच : डॉ० लक्ष्मी नारायण लाल, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली, 1973

24. रंगकर्म : वीरेन्द्र नारायण, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1979